डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम आयोजित

प्रताप सहगल ने साझा किए नरेंद्र मोहन के व्यक्तित्व पर अपने विचार
नरेंद्र मोहन एक चलने, खोजने और लड़ने वाले लेखक थे – प्रताप सहगल

नई दिल्ली। 2 अगस्त 2022 ; साहित्य अकादेमी द्वारा आज आयोजित 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम में प्रख्यात लेखक नरेंद्र मोहन पर उनके मित्र एवं लेखक प्रताप सहगल ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि उनपर बोलना आसान भी है और मुश्किल भी। उनसे मेरा रिश्ता लंबी कविता में मेरी रुचि के कारण शुरू हुआ था। क्योंकि उन्होंने लंबी कविता की रचना–प्रक्रिया पर पहली पुस्तक संपादित की थी और मैं भी लंबी कविता लिख रहा था। उनसे निकटता तब और बढ़ी जब वे मेरे पास ही आकर राजौरी गार्डन में रहने लगे। उनके या मेरे घर पर एक दूसरे की रचनाओं को सुनने और उनकी बेबाक आलोचना करने का सिलसिला शुरू हुआ। वे अपनी आलोचना पर कभी भी नाराज़ नहीं होते थे। बल्कि उसको गहराई से स्वीकार करके अपनी रचनाओं में बदलाव करते थे। उनकी कविताओं पर टिप्पणी करते हुए सहगल जी ने कहा कि उनकी कविता में दहशत, हँसी, मुक्ति और स्मृति जैसे शब्द बार–बार आते हैं। उन्हें दहशत बचपन में गिरने की वजह से आवाज़ के चले जाने और बारह वर्ष की उम्र में विभाजन के कारण पैदा हुई थी, जो ताउम्र उनके साथ बनी रही।

उनके नाटकों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि वे नाटक की दुनिया में 1984 में आए। उनके नाटक अपने विषय वैविध्य के लिए याद किए जाते हैं। 'कहे कबीर' से लेकर 'मि.जिन्ना' तक उनके सभी नाटक एक दूसरे से बिलकुल अलग थे। उन्होंने उनके नाटकों पर हुए विवादों की भी चर्चा की। उनकी जीवनी की चर्चा करते हुए कहा कि उसका पात्र 'निंदर' असल में उनका बचपन का नाम था। उन्होंने उनके विविधतापूर्ण लेखन के प्रति उनकी मेहनत और सीखने की प्रवृत्ति को प्रमुख बताया। कार्यक्रम में उपस्थित कई प्रमुख लेखकों प्रो. सादिक, सुमन कुमार, विवेक मिश्र, अतुल कुमार, हरिसुमन बिष्ट उनकी पुत्री सुमन पंडित सहित काफी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। उनमें से कुछ ने नरेंद्र मोहन से जुड़े अपने संक्षिप्त संस्मरण भी साझा किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

–के. श्रीनिवासराव